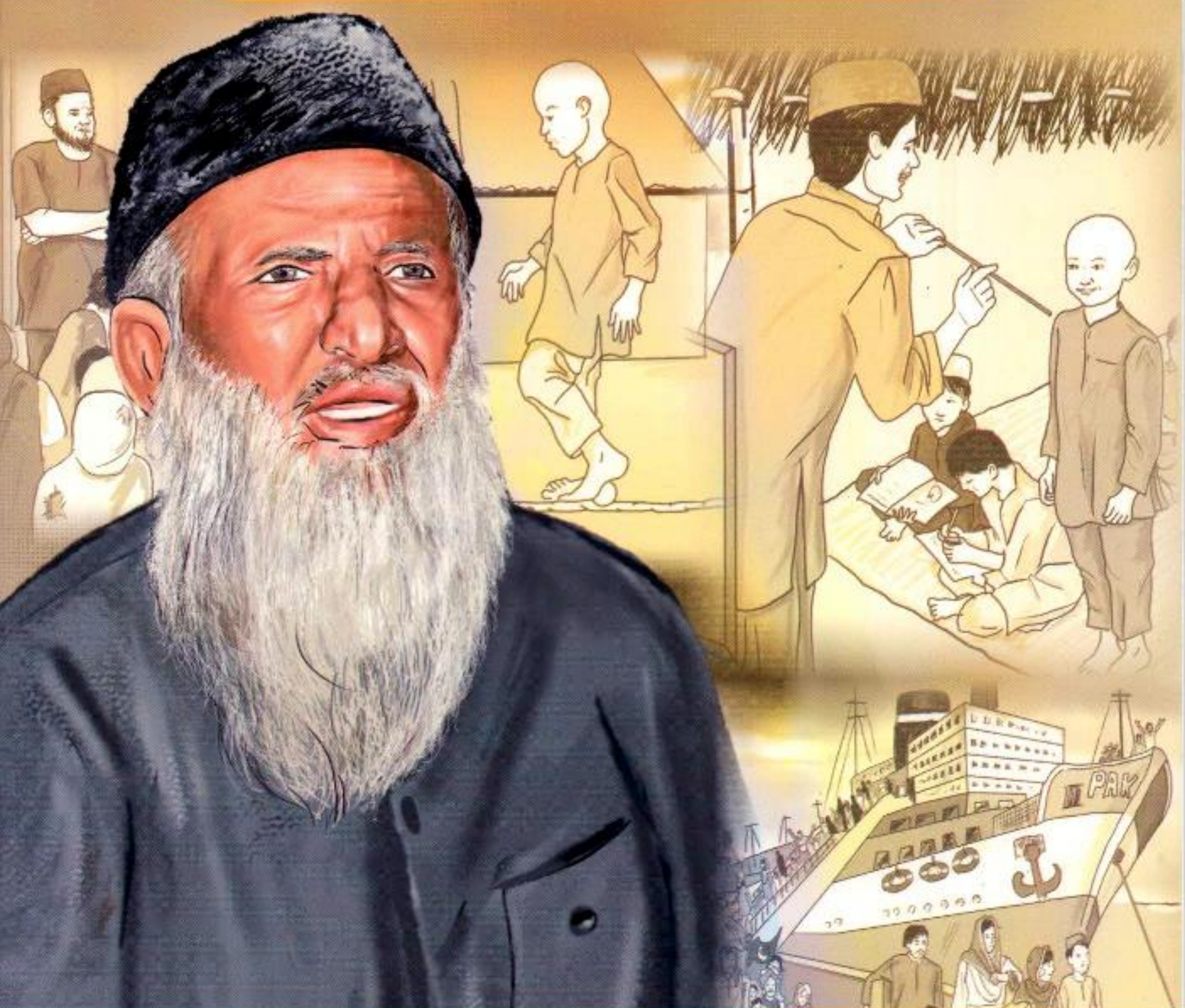
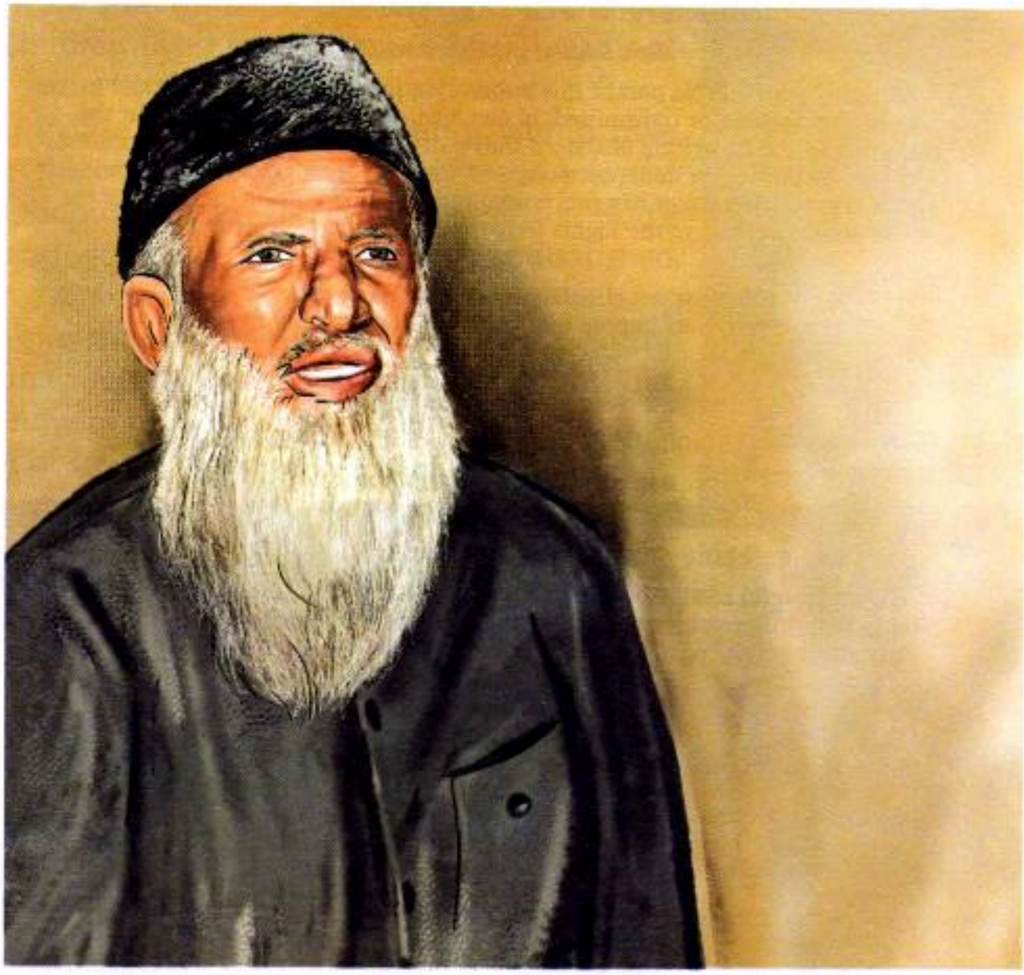
अब्दुल सत्तार ईधी

अमीना अजफ़र, हिंदी : विदूषक



अब्दुल सत्तार ईधी

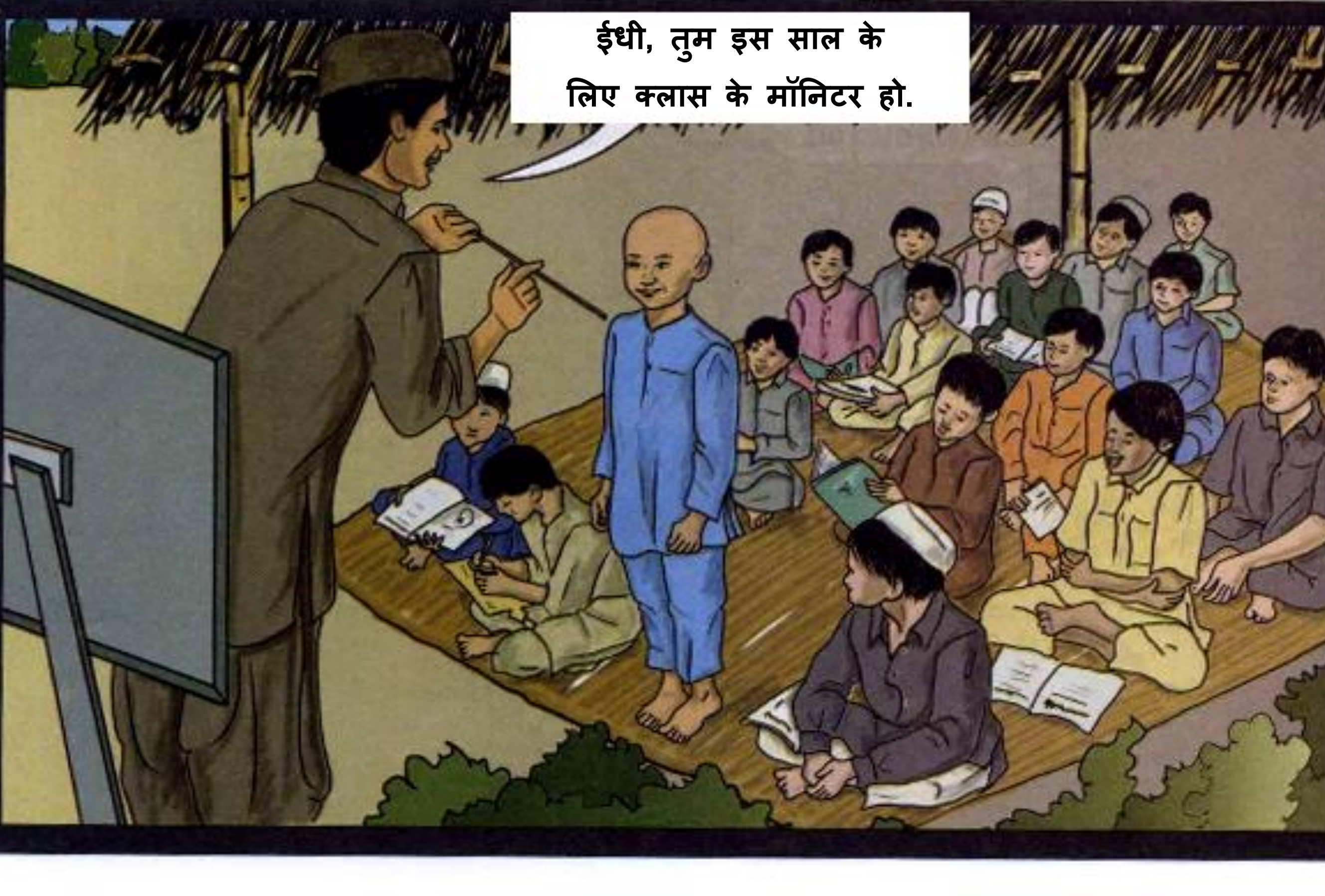
अमीना अजफ़र, हिंदी : विदूषक



सिंध के पूर्व में, भारत का गुजरात राज्य है. गुजरात के काठियावाड़ जिले में एक शहर है - बान्तवा. अब्दुल सत्तार ईधी के पिता अब्दुल शकूर ईधी और माँ हव्वा बाई इसी शहर में रहते थे. अब्दुल शकूर - मेमन व्यापारी समुदाय के थे. परिवार की तरह अब्दुल शकूर भी, सरल ज़िन्दगी जीते और पैसे बचाते थे.

अब्दुल सत्तार ईधी का जन्म 28 फरवरी 1928 को हुआ. कुछ साल बाद घर में एक और लड़के - अज़ीज़ और लड़की जुबेदा का भी जन्म हुआ. वो ज़मीन पर रुई के गद्दे बिछाकर सोते. हर सुबह अब्दुल सत्तार अल्मारी के ऊपर से सब बर्तन नीचे उतारकर रखता. रात के खाने के बाद और माँ के बर्तन धोने के बाद उन्हें फिर वापिस रखता. उनमें से एक बर्तन, कभी इस्तेमाल नहीं होता था. अब्दुल सत्तार उसमें अपने बचाये हुए पैसे छिपा कर रखता. बचपन में ही उसने किफ़ायत का पहला सबक सीखा था.







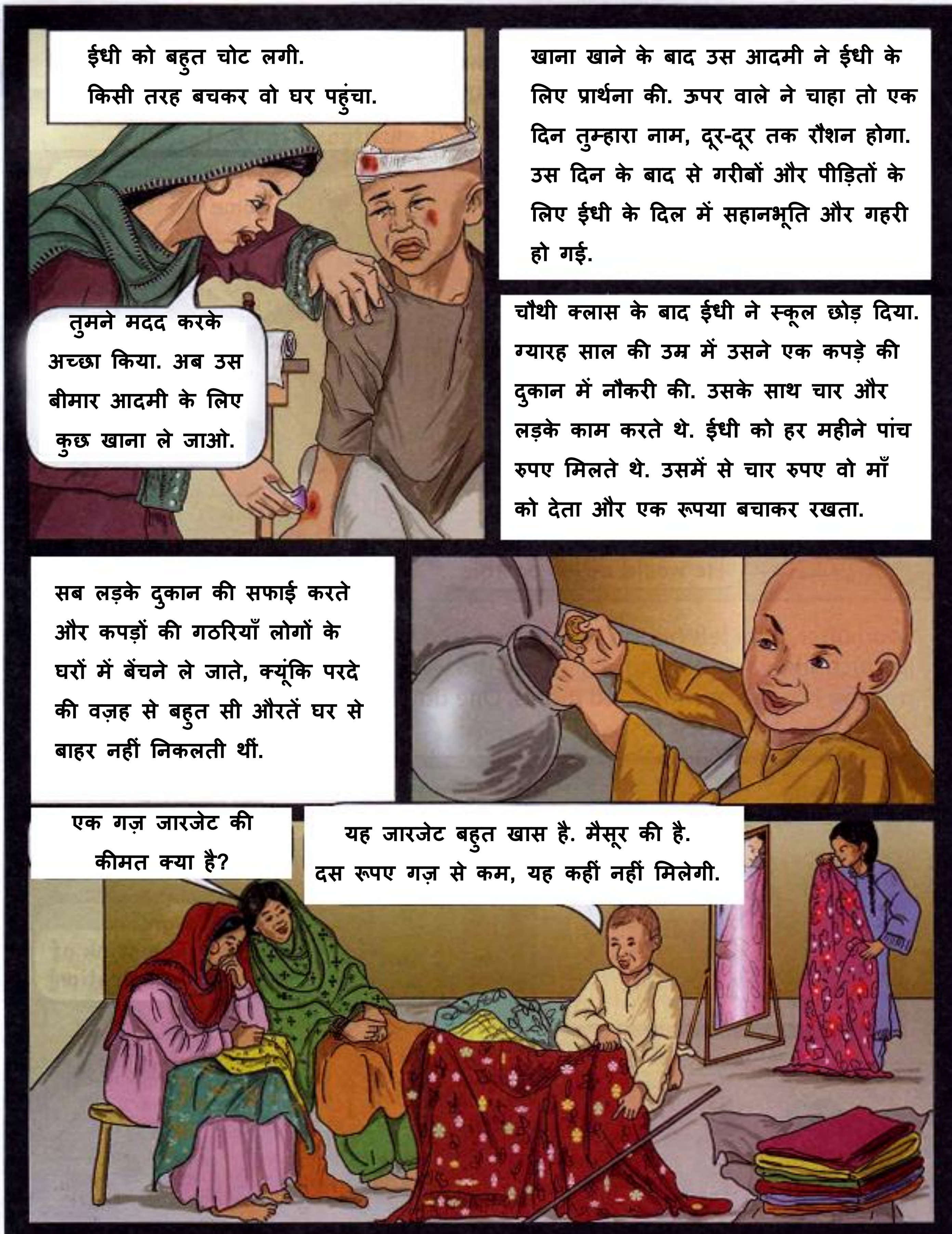
ईधी के पिता को काम के दौरान काफी दौरा करना पड़ता था. हर बार दौरे से वापिस आने के बाद वो ईधी का सिर मुंडवा देते थे. इसलिए ईधी का नाम “रोटी” पड़ा. शायद उसका टकला सिर देखकर लोगों को “रोटी” की याद आई.

ईधी काफी शरारती था. अपने दोस्तों के साथ मिलकर वो पड़ोसियों के साथ खूब शरारतें करता – वो जानवरों की आवाजों की नक़ल करके, उन्हें डराता. कभी-कभी वो अन्य बच्चों के साथ मिलकर उन्हें सर्कस के करतब भी दिखता.




शुरू से ही ईधी की माँ ने उसे, ज़रूरतमंदों की मदद करने की सीख दी. स्कूल जाते वक़्त, वो हर रोज़ उसे दो पैसे देतीं.
एक पैसा खुद पर खर्च करना, दूसरा किसी ज़रूरतमंद को देना.
जब ईधी स्कूल से वापिस आया...
अम्मी, तुम कहाँ हो?
मैं रोटी बना रही हूँ. आओ खाओ.
मैंने आज यह अमरुद खरीदा – तुम खाओ.
क्या एक पैसे का सिर्फ एक ही अमरुद मिला? दूसरे पैसे का तुमने क्या किया?
मेरी क्लास में एक लड़के की माँ बीमार हैं. उसने नाश्ता नहीं खाया था. आधा अमरुद मैंने उसे दिया और उसके लिए एक पैसे के चने भी खरीदे.
बड़ा नेक काम किया.


मदद! सांप!
सांप!
सांप!
एक दिन कुछ शरारती लड़के एक बीमार आदमी को मार रहे थे.
ईधी उन्हें पेड़ के पीछे से देख रहा था.
उसे परेशान मत करो. उसने तुम्हारा क्या बिगाड़ा है?
तू कौन होता है! अपने आपको क्या समझता है? उसका रखवाला!?
फिर उन लड़कों ने उस आदमी को छोड़कर ईधी की जमकर पिटाई लगाई.


ईधी को बहुत चोट लगी.
किसी तरह बचकर वो घर पहुंचा.
तुमने मदद करके अच्छा किया. अब उस बीमार आदमी के लिए कुछ खाना ले जाओ.
खाना खाने के बाद उस आदमी ने ईधी के लिए प्रार्थना की. ऊपर वाले ने चाहा तो एक दिन तुम्हारा नाम, दूर-दूर तक रौशन होगा. उस दिन के बाद से गरीबों और पीड़ितों के लिए ईधी के दिल में सहानभूति और गहरी हो गई.
चौथी क्लास के बाद ईधी ने स्कूल छोड़ दिया. ग्यारह साल की उम्र में उसने एक कपड़े की दुकान में नौकरी की. उसके साथ चार और लड़के काम करते थे. ईधी को हर महीने पांच रुपए मिलते थे. उसमें से चार रुपए वो माँ को देता और एक रूपया बचाकर रखता.
सब लड़के दुकान की सफाई करते और कपड़ों की गठरियाँ लोगों के घरों में बेंचने ले जाते, क्यूंकि परदे की वज़ह से बहुत सी औरतें घर से बाहर नहीं निकलती थीं.
एक गज़ जारजेट की कीमत क्या है?
यह जारजेट बहुत खास है. मैसूर की है.
दस रूपए गज़ से कम, यह कहीं नहीं मिलेगी.

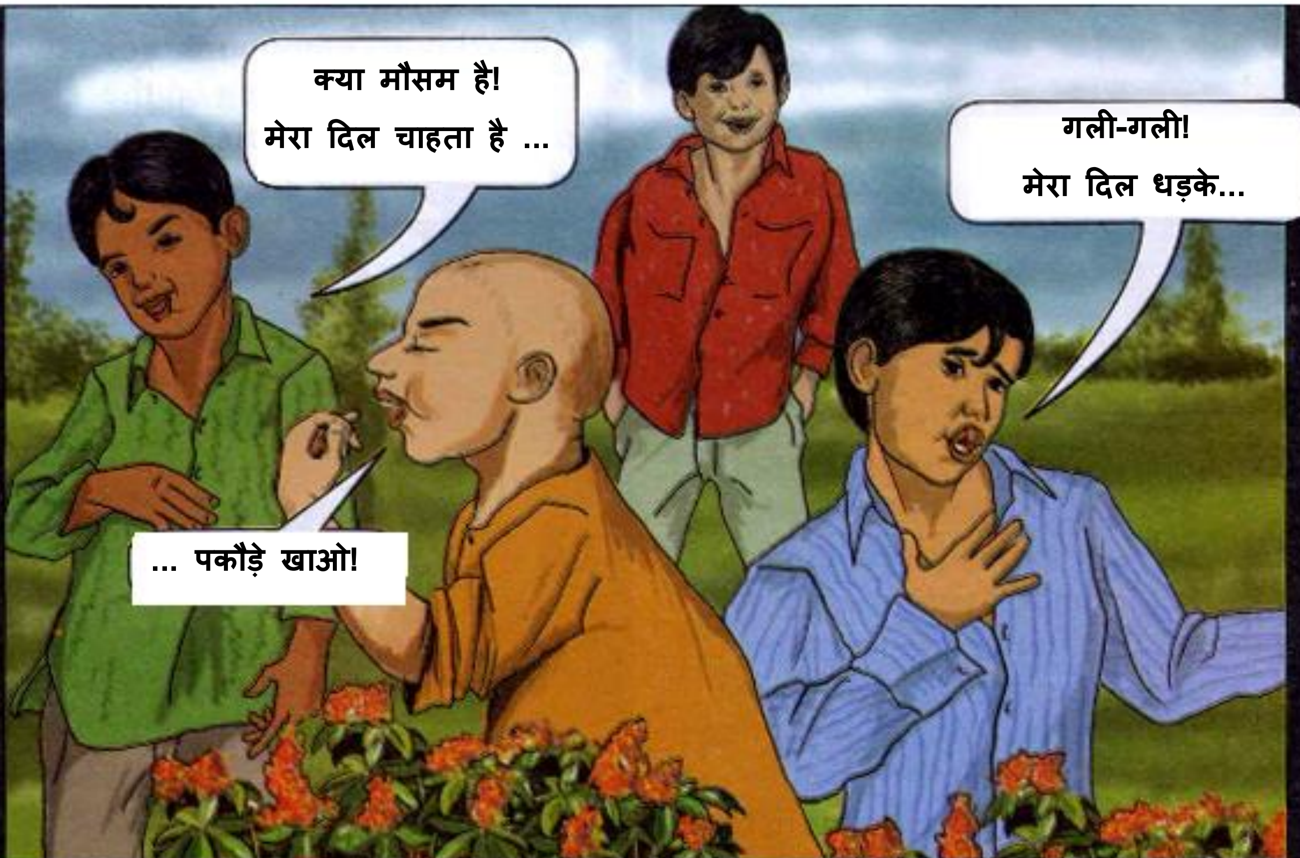
दुकान का मालिक ईधी की इमानदारी और मेहनत की बहुत कद्र करता था. इससे बाकी लड़के जलते थे. एक दिन उन्होंने मलिक से झूठी शिकायत की, "ईधी, कपड़ा चोरी करता है, और ...



कुछ समय बाद ईधी ने वो काम छोड़ दिया और माँ की बात मानकर दुबारा स्कूल में पढ़ना शुरू किया. वो पढ़ाई में अच्छा था. वहां उसने इंग्लिश सीखी. वो अच्छे नंबरों से पास हुआ. एक दिन वो अपने दोस्तों के साथ फिल्म देखने गया – यह उसकी पहली फिल्म थी.



उसके बाद, बहुत दिनों तक ईधी के दोस्त उसी फिल्म के डायलॉग दोहराते रहे.





स्कूल की पढ़ाई से ईधी का मन ऊब गया. इसलिए 13 साल की उम्र में उसने स्कूल छोड़ दिया. बड़े होकर वो क्या करेगा? अक्सर वो उसके बारे में सोचता. नहाते समय उसे सोचने के लिए ज्यादा वक़्त मिलता था.

मैं सड़क पर माचिस बेंचूंगा, और जब काफी पैसे इकट्ठे होंगे तो मैं उनसे कंपनी के शेयर खरीदूंगा. अपनी आधी कमाई मैं गरीबों पर खर्च करूंगा. मैं उनके लिए अस्पताल बनाऊंगा और विकलांगों के लिए एक घर बनाऊंगा.

ईधी ने स्कूल तो छोड़ दिया था. पर उसे किताबें पढ़ने का चस्का लग गया. उसने मार्क्स, लेनिन और हज़रत अबू ज़ार घफ्फारी के विचारों के बारे में पढ़ा. उसने इस्लामी इतिहास में करबला और अन्य घटनाओं के बारे में भी पढ़ा. उसने रूसी साहित्य भी पढ़ा. यह सब चीज़ें उसने लाइब्रेरियों और गुजराती पत्रिकाओं में पढ़ीं. उसे यात्रा वृत्तान्त पढ़ने का बहुत शौक था. 14 साल की उम्र से वो हर समय कुछ-न-कुछ सोचता ही रहता था. वो घर के बाहर बेन्च पर बैठा हो या फिर गुसलखाने में हो, वो बस सोचता ही रहता..






बाकी लड़के मेरा मज़ाक बनाते हैं. मुझे उसकी क्या परवाह? वो जब तक पैसे कमाएंगे तब तक मैं चलते-चलते पूरी दुनिया देख डालूँगा!
मैं दुनिया का चप्पा-चप्पा छान मारूंगा. पैसे नहीं तो क्या? मैं पैदल-पैदल ही चलूँगा!
कायदे आज़म - मोहम्मद अली जिन्ना एक बार बान्तवा आए. उन्होंने एक बड़ी भीड़ को भाषण दिया और मेमन समुदाय के लोगों से कहा : 'पाकिस्तान आओ. वहां अपना कारोबार लगाओ. वहां तुम बहुत तरक्की करोगे, और पाकिस्तान भी तरक्की करेगा.'
Muslim League
पाकिस्तान जिंदाबाद!
PAK
पाकिस्तान जिंदाबाद!
फिर अन्य लोगों के साथ, ईधी का परिवार भी पाकिस्तान पहुंचा.

ईधी के परिवार ने जोडिया बाज़ार के पास छुब्बी गली में एक कमरा किराए पर लिया. वहां आसपास मेमन समुदाय का अच्छा कारोबार था. ईधी के पिता कहते, कि अगर किसी धंधे में तरक्की करनी है तो उसमें सबसे निचले स्तर से काम शुरू करो. वहां ईधी थोक बाज़ार से पेंसिलें, छोटी तौलिए आदि खरीदता और उन्हें सड़क के किनारे बेंचता.



ईधी, पेंसिल आदि बेंचकर जो कुछ भी कमाता वो उसमें भी बचत करता. वो सब कुछ खर्च नहीं करता, क्यूंकि बचे पैसों से वो एक डिस्पेंसरी शुरू करना चाहता था.

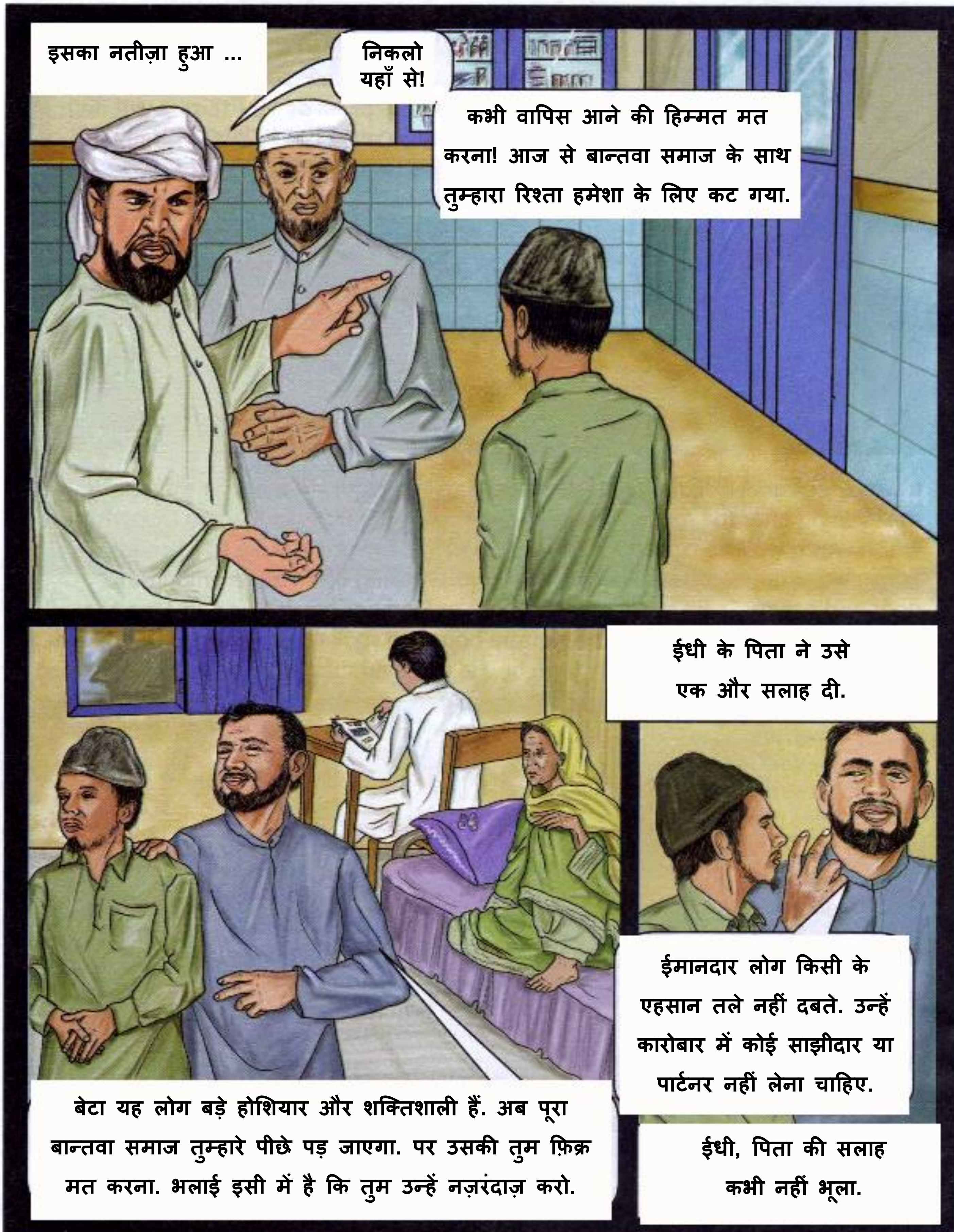


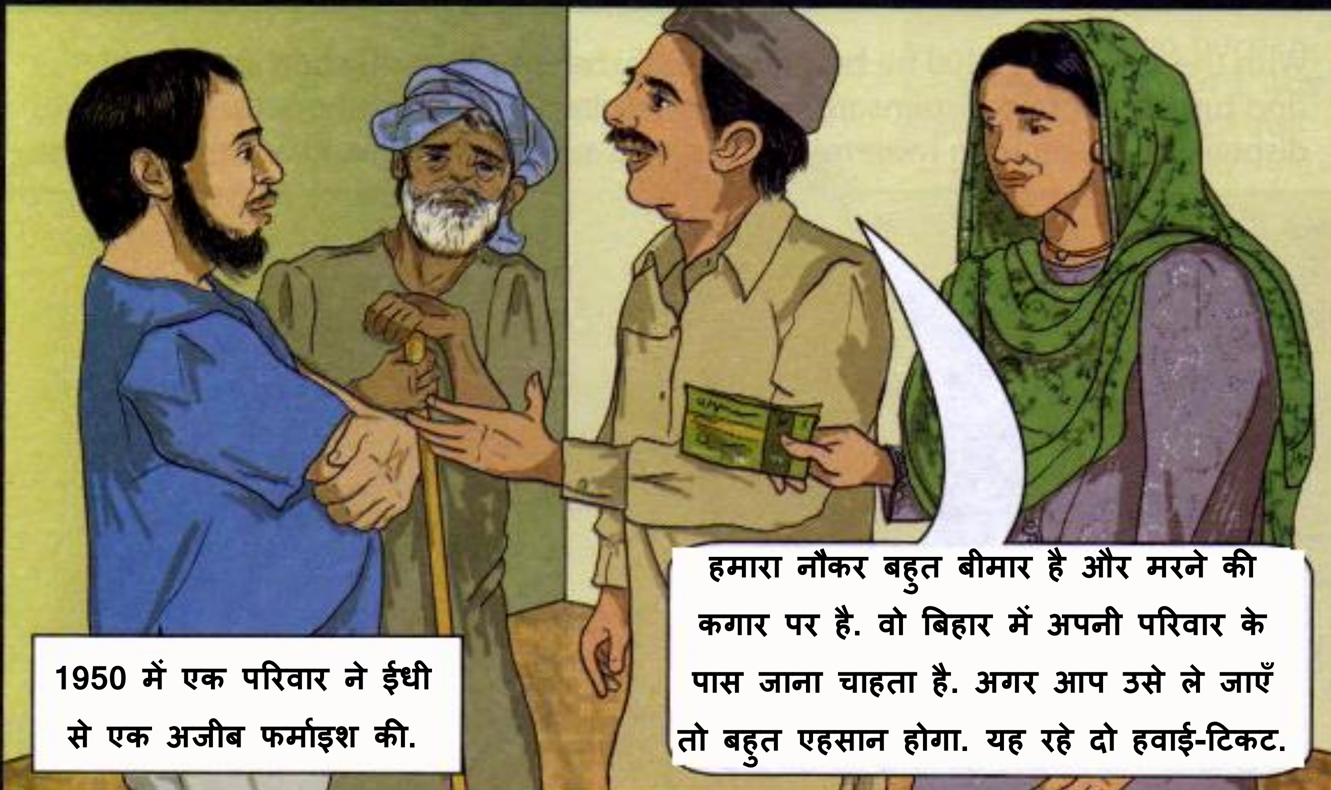
इधर ईधी की माँ की तबियत खराब रहने लगी. इसलिए ईधी घर पर ही ज्यादा समय बिताता – वो घर के काम में माँ की मदद करता और अपने छोटे भाई की भी देखभाल करता.



1948 में ईधी, सुबह को एक कपड़े की दुकान में काम करता, और बाज़ार बंद होने के बाद शाम को वो जनहित में चलाई जाने वाली बान्तवा मेमन डिस्पेंसरी में काम करता. पर वहां केवल मेमन समुदाय के लोगों को ही मुफ्त दवाएं मिलती थीं. ईधी अक्सर इस नियम को तोड़ता था – वो गरीब और ज़रूरतमंदों के बीच फर्क नहीं करता था. इसलिए चाहें मेमन हों या फिर और कोई, वो सभी को मुफ्त दवाएं बांटता. एक दिन बोर्ड की मीटिंग में इस भेदभाव पर, उसने अपनी आपत्ति भी जताई. उसने उम्रदराज़ बोर्ड मेम्बेर्स की आलोचना की और कहा ....




इसका नतीज़ा हुआ ...
निकलो यहाँ से!
कभी वापिस आने की हिम्मत मत करना! आज से बान्तवा समाज के साथ तुम्हारा रिश्ता हमेशा के लिए कट गया.
बेटा यह लोग बड़े होशियार और शक्तिशाली हैं. अब पूरा बान्तवा समाज तुम्हारे पीछे पड़ जाएगा. पर उसकी तुम फ़िक्र मत करना. भलाई इसी में है कि तुम उन्हें नज़रंदाज़ करो.
ईधी के पिता ने उसे एक और सलाह दी.
ईमानदार लोग किसी के एहसान तले नहीं दबते. उन्हें कारोबार में कोई साझीदार या पार्टनर नहीं लेना चाहिए.
ईधी, पिता की सलाह कभी नहीं भूला.



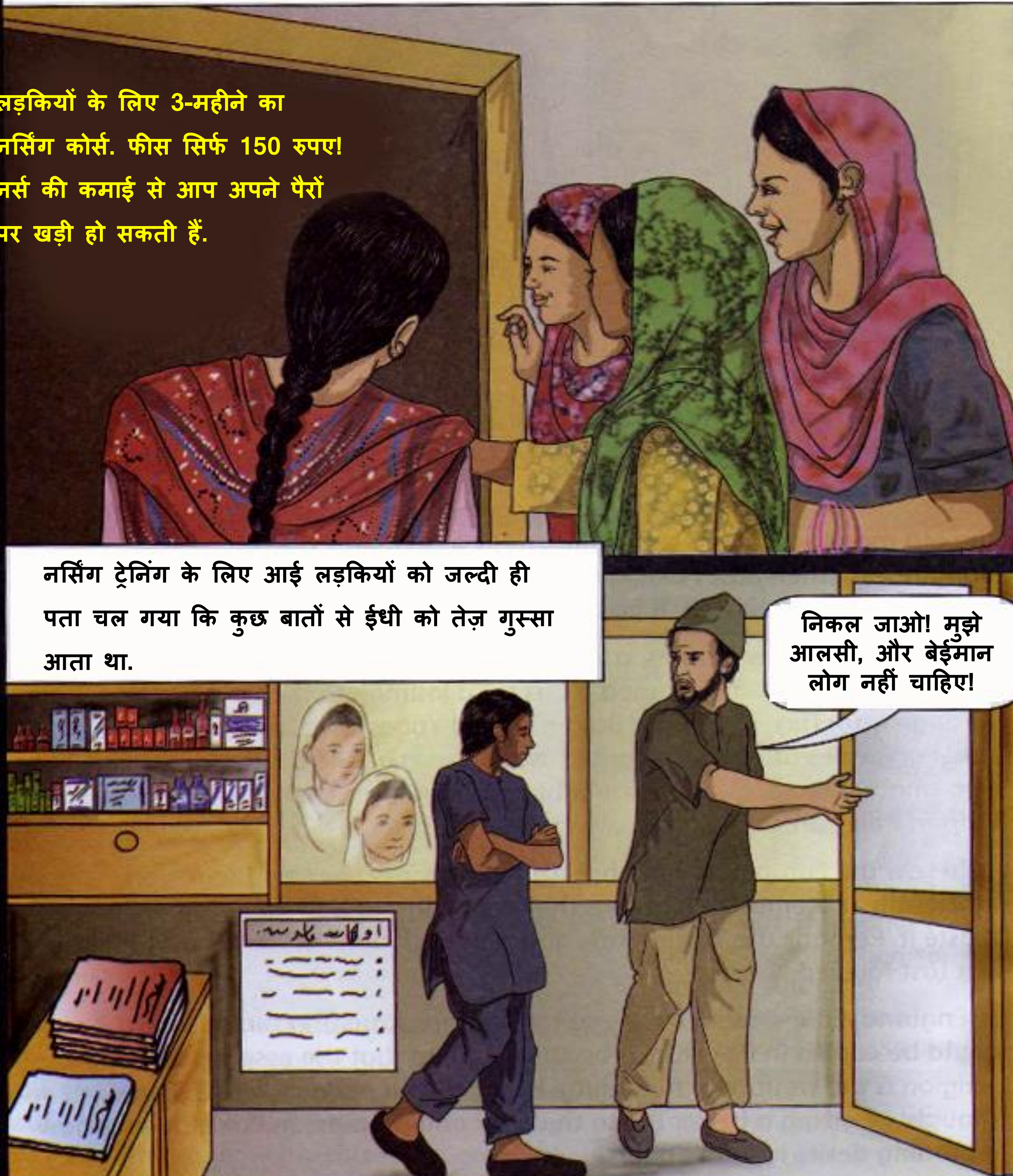
ईधी, किसी गरीब की मदद को कभी मना नहीं कर सकता था. उसे यात्रा करना भी पसंद था. ईधी ने उस बूढ़े आदमी को उसके घर पहुँचाया. वहाँ कुछ समय बाद वो मर गया. वहां से ईधी बांग्लादेश गया, जहाँ उसका सौतेला भाई रहता था. पाकिस्तान के बाहर ईधी की यह पहली यात्रा थी. उसमें यात्रा करने की हमेशा से एक प्रबल इच्छा थी. अब वो और पक्की हुई.

1956 में ईधी ने एक बस्ते में कुछ कपड़े, खाना, पैसे और अपना पासपोर्ट डाला और फिर वो एक बस में बैठकर, पश्चिम देशों की यात्रा पर निकला. ईरान, तुर्की, बुल्गारिया, यूगोस्लाविया होते हुए उसने कई यूरोपीय देशों का दौरा किया. लोग उसे गरीब समझकर सिक्के दान में देते. उन पैसों को ईधी ने बचाया क्यूंकि उनसे वो पाकिस्तान में एक डिस्पेंसरी शुरू करना चाहता था.

ईधी को यूरोप में लोग, बहुत चुस्ती और फुर्ती से चलते हुए दिखे. वो अपने काम में भी चतुर थे. यूरोप के लोग समय का मूल्य समझते थे और उसे बर्बाद नहीं करते थे. शायद दो महायुद्धों ने उन्होंने यह सीखा था – हमारे पास जीवन का यह उपहार, बहुत सीमित समय के लिए ही है.

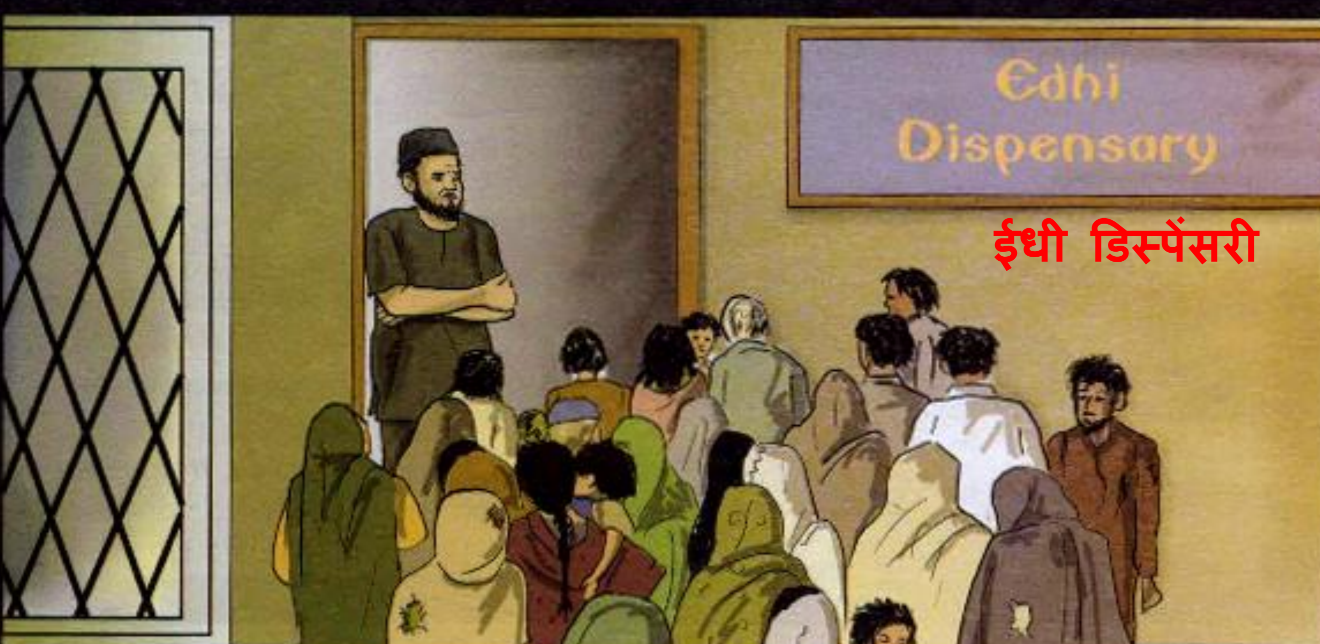
इंग्लैंड में ईधी ने वहां की सरकार द्वारा चलाई गई कई कल्याणकारी योजनाओं को देखा. क्या उन्हें पाकिस्तान में लागू करना संभव होगा? उसने यह भी महसूस किया कि हरेक धर्म का एक ही मकसद है – इंसानियत की भलाई. इस्लाम में उसे “हुकूकुल ईबाद” बुलाया जाता है. पाकिस्तान में गरीब लोगों की भलाई, अब ईधी की ज़िन्दगी का एक मात्र मकसद बनी.

ईधी ने अभी तक जो 2300 रुपए बचाए थे उनसे उसने कराची में एक छोटी दुकान खरीदी. दुकान में उसने एक डिस्पेंसरी शुरू की जहाँ सस्ती दवाइयां मिलती थीं. डिस्पेंसरी के ऊपर उसने एक प्रसूती केंद्र खोला और वहां नर्सिंग का ट्रेनिंग प्रोग्राम भी शुरू किया.





बीमार, बेघर, बूढ़े और बच्चे डिस्पेंसरी के सामने आकर बैठ जाते थे. उन्हें देखकर ईधी को अपनी लाचार माँ की याद आती थी. धीरे-धीरे उन सबकी ज़िम्मेदारी भी, ईधी ने अपने ऊपर ली और डिस्पेंसरी के ऊपर उन्हें रखा.



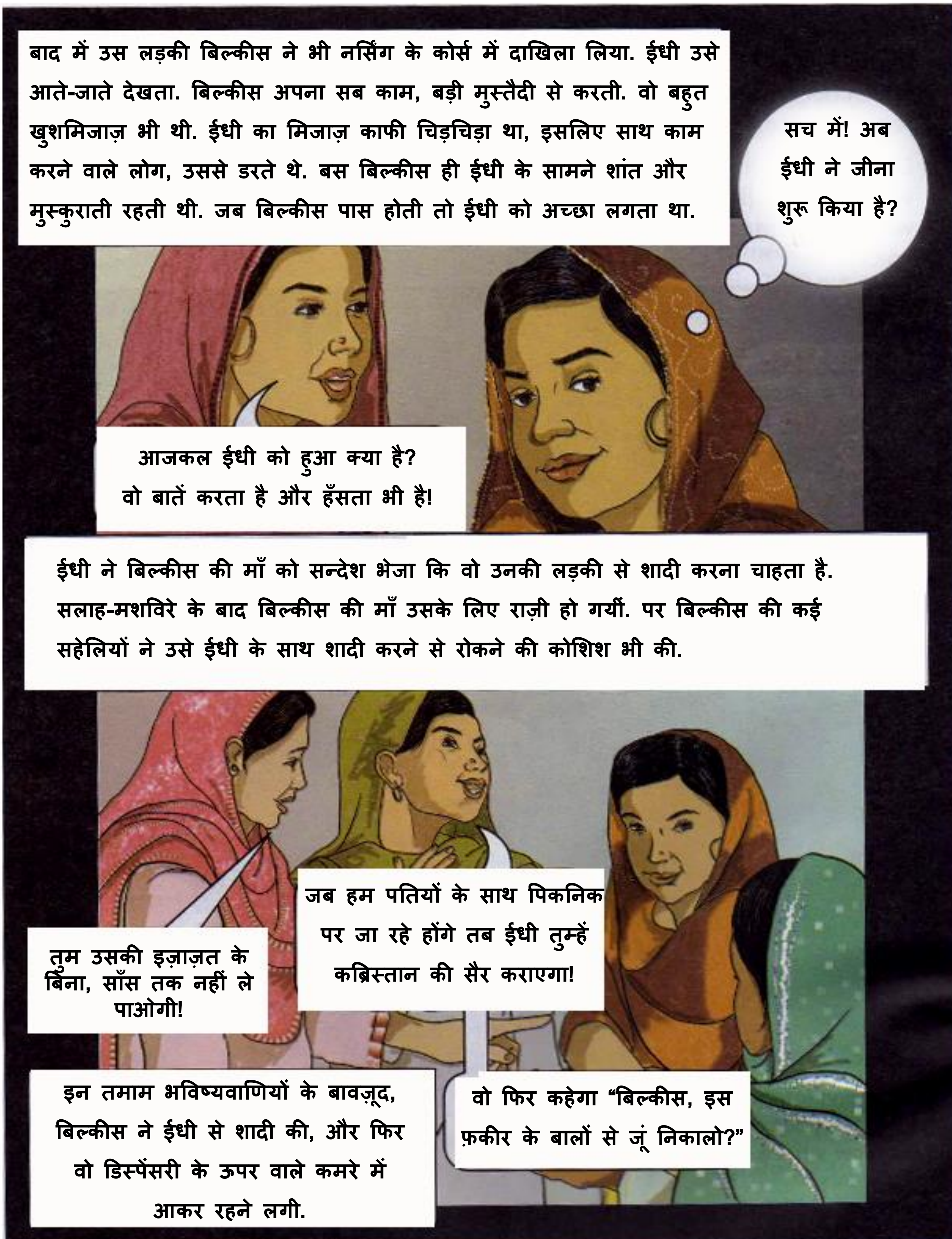
उस ज़माने में पूरे सिंध प्रान्त में सिर्फ पांच एम्बुलेंस थीं. जब ईधी की माँ को अस्पताल ले जाने का वक्त आया, तो उसके लिए कोई एम्बुलेंस नहीं मिली. उन्हें एक रिक्शा से अस्पताल ले जाया गया.


एक मेमन व्यापारी बहुत दिनों से ईधी के काम को नजदीकी से देख रहा था. एक दिन उसने ईधी की डिस्पेंसरी को, 20 हज़ार रुपए का दान दिया. उसमें से 7000 रुपए खर्च करके, ईधी ने सबसे पहले एक पुरानी गाड़ी खरीदी.
ईधी ने उस नीली वैन को "गरीबों की गाड़ी" नाम दिया. वो गाड़ी पूरे सिंध प्रान्त में घूमती. उसमें बीमार लोगों को अस्पताल और मृत लोगों को दफ़नाने ले जाया जाता.
गरीबों की गाड़ी
जब कोई मुश्किल में होता है तो हम यह नहीं देखते - कि वो दोस्त है या दुश्मन. हम सिर्फ उसकी मदद करते हैं!
एक दिन ईधी के कट्टर दुश्मन - एक मेमन सेठ की बेटी, घर की छत से गिर गई. क्यूंकि कोई भी एम्बुलेंस उपलब्ध नहीं थी इसलिए ईधी को अपनी गाड़ी लाने को कहा गया. ईधी उस बच्ची को अस्पताल ले गया. जबकि उसके दोस्तों ने उसे ऐसा करने से मना करा.

उस एकलौती नीली गाड़ी के बाद ईधी एम्बुलेंस सर्विस की शुरुआत हुई. धीरे-धीरे इस एम्बुलेंस सर्विस का पूरे पाकिस्तान में विस्तार हुआ और वो फिर वो मुल्क में सबसे बड़ी एम्बुलेंस सर्विस बनी. ईधी की एम्बुलेंस, किसी भी दुर्घटना में सबसे पहले मौके पर पहुँचती थी.

ईधी, यतीमों, गरीबों और विकलांगों के लिए घर चलाने में बहुत व्यस्त था. साथ-साथ वो प्रसूती गृह और डिस्पेंसरी भी चलाता था. वो बहुत कम ही सोता था. एक रात थककर चूर होने के बाद जब वो लेटा तो एक नई आवाज़ ने उसे उठाया....




बाद में उस लड़की बिल्कीस ने भी नर्सिंग के कोर्स में दाखिला लिया. ईधी उसे आते-जाते देखता. बिल्कीस अपना सब काम, बड़ी मुस्तैदी से करती. वो बहुत खुशमिजाज़ भी थी. ईधी का मिजाज़ काफी चिड़चिड़ा था, इसलिए साथ काम करने वाले लोग, उससे डरते थे. बस बिल्कीस ही ईधी के सामने शांत और मुस्कुराती रहती थी. जब बिल्कीस पास होती तो ईधी को अच्छा लगता था.
सच में! अब ईधी ने जीना शुरू किया है?
आजकल ईधी को हुआ क्या है? वो बातें करता है और हँसता भी है!
ईधी ने बिल्कीस की माँ को सन्देश भेजा कि वो उनकी लड़की से शादी करना चाहता है. सलाह-मशविरे के बाद बिल्कीस की माँ उसके लिए राज़ी हो गयीं. पर बिल्कीस की कई सहेलियों ने उसे ईधी के साथ शादी करने से रोकने की कोशिश भी की.
तुम उसकी इज़ाज़त के बिना, साँस तक नहीं ले पाओगी!
जब हम पतियों के साथ पिकनिक पर जा रहे होंगे तब ईधी तुम्हें कब्रिस्तान की सैर कराएगा!
वो फिर कहेगा “बिल्कीस, इस फ़कीर के बालों से जूं निकालो?”
इन तमाम भविष्यवाणियों के बावज़ूद, बिल्कीस ने ईधी से शादी की, और फिर वो डिस्पेंसरी के ऊपर वाले कमरे में आकर रहने लगी.

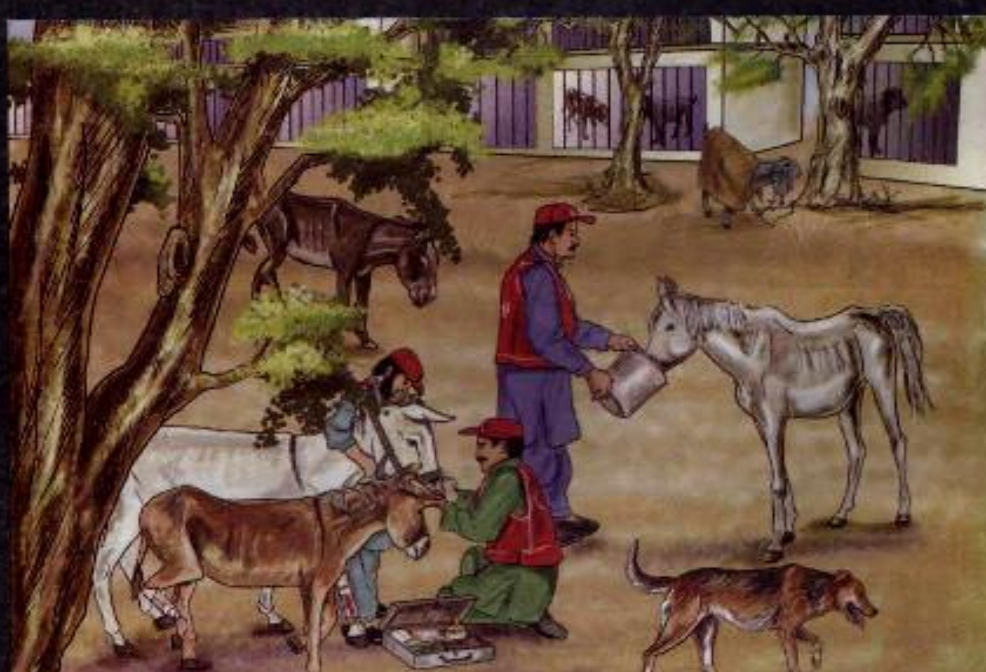
शादी के बाद बिल्कीस पूरी तरह से अपने पति के काम में लग गई. उसने सारे यतीम बच्चों की देखभाल करने की ज़िम्मेदारी संभाली – चाहें वो बेघर या विकलांग हों. कई छोटे बच्चों को उनके माँ-बाप कूड़े के ढेर या फिर नालों में फेंक जाते थे. बच्चों को पालने की शायद उनकी हैसियत ही नहीं थी. इसलिए पूरे मुल्क में, हर ईधी सेन्टर के बाहर पालने लगवाए गए. उन पालनों में माँ-बाप, अनचाहे बच्चों को छोड़ सकते थे.



जिन बच्चों को कोई गोद नहीं लेता था, उनकी परवरिश और पढ़ाई, ईधी सेन्टर में ही होती थी. ईधी फाउंडेशन कई क्षेत्रों में सामाजिक कार्य करती है – गरीब और यतीम बच्चों के लिए अनाथालय चलाती है, गरीब लड़कियों की देखभाल करती है, वृद्ध-आश्रम, गरीबों के लिए मुफ्त खाने का बंदोबस्त करती है. “ईधी गाँव” में नशाखोरों और ड्रग्स से पीड़ित लोगों के पुनर्वास का काम होता है.

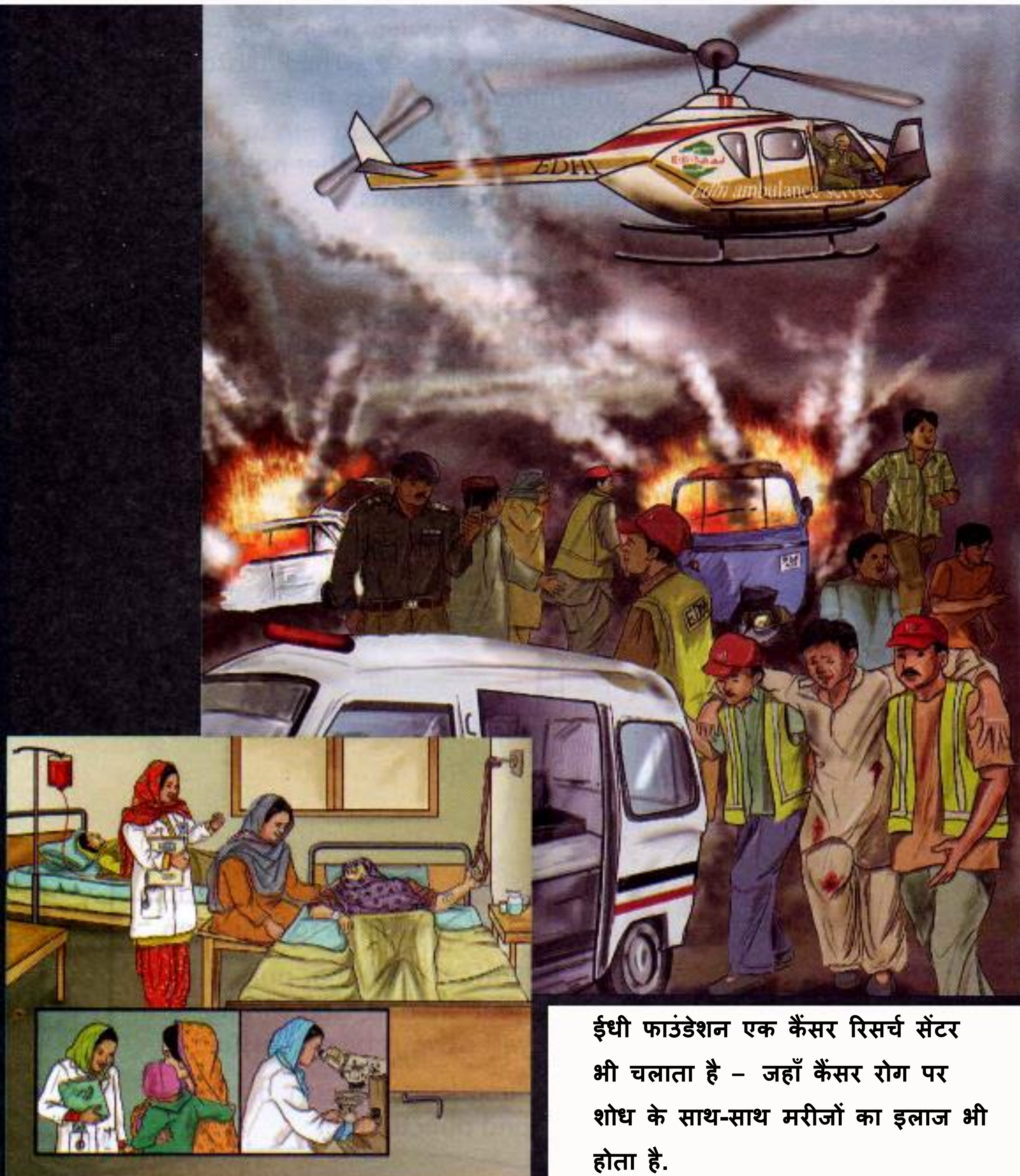
पाकिस्तान के अलग-अलग शहरों में बहुत से ईधी सेन्टर हैं.
जब ईधी और बिल्कीस वहां जाते हैं तो उन्हें देखकर बच्चे बेहद खुश होते हैं.





ईधी फाउंडेशन बीमार, घायल, बूढ़े और भटके हुए जानवरों
की देखभाल के लिए भी कई सेन्टर चलाती है.

अगर कहीं कोई दुर्घटना हो तो ईधी के कार्यकर्ता विपत्ति-ग्रस्त लोगों की मदद के लिए मौके पर सबसे पहले पहुँचते हैं. ईधी एम्बुलेंस सर्विस आज दुनिया की सबसे बड़ी स्वैच्छिक एम्बुलेंस सर्विस है. उसके पास खुद के हवाई जहाज़ और हेलीकाप्टर तक हैं.



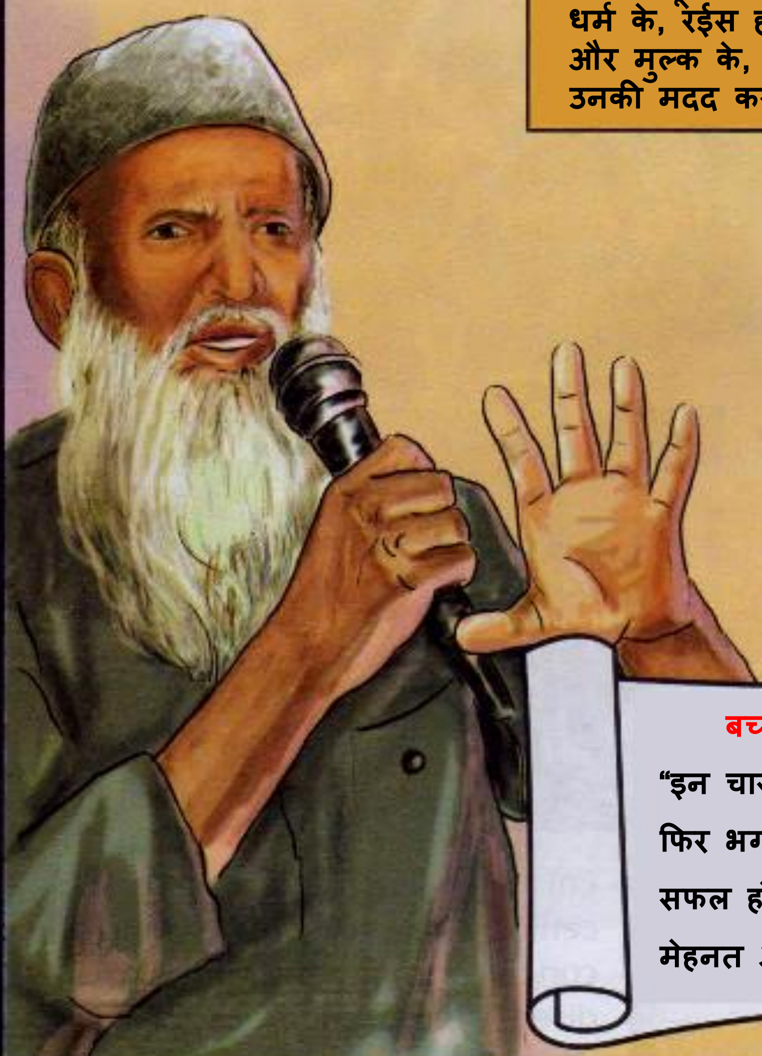
ईधी फाउंडेशन एक कैंसर रिसर्च सेंटर भी चलाता है – जहाँ कैंसर रोग पर शोध के साथ-साथ मरीजों का इलाज भी होता है.



रेमन मैगसेसे मैडल

अब्दुल सत्तार ईधी और बिल्कीस ईधी को उनके अनूठे और मानवीय कार्य के लिए तमाम पुरुस्कारों से सम्मानित किया जा चुका है. 1986 में उन्हें, फिलीपींस में रेमन मैगसेसे अवार्ड से सम्मानित किया गया. 1988 में उन्हें, सोवियत यूनियन में, लेनिन शांति पुरुस्कार से नवाज़ा गया. पाकिस्तान की सरकार ने उन्हें निशान-ए-इम्तिआज़ का ख़िताब दिया. इनके अलावा उन्हें कई अन्य राष्ट्रीय और अंतर-राष्ट्रीय पुरुस्कार मिले हैं.

"मेरा काम खुदा के एक हर प्राणी के लिए है – इंसानों और जानवरों, दोनों के लिए है. मैं सभी को एक-बराबर मानता हूँ – चाहें वो मुस्लिम हों या फिर किसी और धर्म के, रईस हों या गरीब, पाकिस्तानी हों या किसी और मुल्क के, उन्हें जब ज़रुरत पड़ती है, तब मैं उनकी मदद करता हूँ."



बच्चों के लिए ईधी का सन्देश

"इन चार नियमों का पालन करो और फिर भगवान ने चाहा तो तुम ज़रूर सफल होगे: सरलता, ईमानदारी, कठिन मेहनत और समय की पाबंदी."

अब्दुल सत्तार ईधी और बिल्कीस ईधी - पाकिस्तान के सर्वश्रेष्ठ सामाजिक कार्यकर्ता

अक्सर कहा जाता है कि हर सफल मर्द के पीछे एक औरत होती है. पर बिल्कीस कभी भी ईधी के साए में नहीं रहीं. उन्होंने हमेशा अपने पति के कंधे-से-कन्धा मिलाकर काम किया.

अब्दुल सत्तार ईधी ने खुद बिल्कीस के बारे में कहा, "ज़्यादातर काम बिल्कीस ही करती हैं - क्यूंकि औरतें और बच्चे, गरीबी और सामाजिक दमन के सबसे बुरे शिकार होते हैं, और उन्हें सबसे ज्यादा मदद की ज़रुरत होती है. ऐसे लोगों तक बिल्कीस, मुझ से कहीं बेहतर तरीके से पहुँच सकती हैं. एक औरत की हैसियत से उनमें, लोगों का दुःख-दर्द समझने और उसे दूर करने की संवेदना और करुणा है. बिल्कीस, उनकी समस्याओं को बेहतर समझती हैं और उनकी मदद करती हैं."

बिल्कीस हमेशा से यूनिफार्म पहनना चाहती थीं. वो एयर होस्टेस या फिर नर्स बनना चाहती थीं. वो नर्स इसलिए बनीं क्यूंकि उनकी माँ भी नर्स थीं. बिल्कीस में पीड़ित लोगों की मदद करने की गहरी चाह थी. बचपन में वो घायल परिंदों की देखभाल करती थीं, और मरी चिड़ियों को दफनाती थीं. बिल्कीस को सबसे ज्यादा मज़ा किस काम में आता है – लड़कियों को नर्सिंग की ट्रेनिंग देने में, मुहताज़ औरतों और कूड़े के ढेर में फेंके हुए बच्चों को सहारा देने में.

अक्सर लोग अनचाहे बच्चों को नालों या कूड़े के ढेर में फेंक जाते थे. बिल्कीस ने पहल कर हर ईधी सेन्टर के सामने पालने लगवाए और साथ में यह नोटिस भी लगवाया **"बच्चों का गला मत घोटों. उन्हें जिंदा, पालने में रखो. एक पाप को छिपाने के लिए दूसरा पाप मत करो."** बिल्कीस ने आजतक लाखों अनाथ बच्चों की देखभाल और परवरिश की है.

पैसे और शोहरत ने ईधी दंपत्ति को भ्रष्ट नहीं किया. वे अभी भी मिठादर की तंग गलियों में एक छोटे मकान में रहते हैं और **"ज़मीन पर रहकर, भगवान का काम करते हैं."**